



VISION IAS

www.visionias.in

P165

आजादी के बाद भारत सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

Plus Pramesh eLib

www.pluspramesh.in



VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

आज़ादी के बाद भारत

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

अध्याय 1: राष्ट्र निर्माण और एकीकरण: प्रक्रिया और चुनौतियाँ	6
1.1 परिचय (Introduction)	6
1.2. विभाजन और इसके बाद	7
1.2.1 विरासत और विभाजन के मुद्दे: सीमाएं, विस्थापन और पुनर्वास	7
1.2.2. सीमा रेखा	7
1.2.3. रेडक्लिफ निर्णय के निहितार्थ	7
1.2.4. इस निर्णय की सीमा	8
1.2.5. विभाजन के परिणाम	8
1.2.6. राहत और पुनर्वास	9
1.2.7. विभाजन से परे: आंतरिक एकीकरण की चुनौतियाँ	10
1.2.7.1. एकीकरण की योजना	10
1.3. रियासतों का एकीकरण (Integration of Princely States)	11
1.3.1. जूनागढ़	13
1.3.2. कश्मीर	13
1.3.3. हैदराबाद	14
1.3.4. मणिपुर	16
1.3.5. अन्य राज्य	16
1.3.6. फ्रांसीसी और पुर्तगाली बस्तियाँ	16
1.4. जनजातीय एकीकरण	17
1.4.1. भारत की जनजातीय नीति का मूल	17
1.4.2. नीति का आलोचनात्मक मूल्यांकन और इसके प्रभाव	18
1.4.3. राज्य द्वारा की गई पहल के कारण सकारात्मक विकास	19
1.5. भाषा का मुद्दा	19
1.5.1. संघ की राजभाषा	19
1.5.2. संशोधित अधिनियम की विशेषताएं	21
1.5.3. भाषाई आधारों पर राज्यों का पुनर्गठन	21
अध्याय 2 : लोकतंत्र: प्रक्रिया, चुनौतियाँ और उपलब्धियाँ	24
2.1. चुनावी राजनीति का उद्भव	24
2.2. लोकतांत्रिक व्यवस्था के संस्थागत पहलुओं की स्थापना	24
2.3. कांग्रेस प्रणाली का प्रभुत्व	26
2.3.1. कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति	27
2.4. विपक्षी दल	28
2.4.1. सोशलिस्ट पार्टी	28
2.4.2. भारतीय जनसंघ (BJS)	29
2.4.3. भारत की कम्युनिस्ट पार्टी	29
2.4.3.1. स्वतंत्र पार्टी	29

अध्याय: 3 आर्थिक विकास (Economic Development)	30
3.1. मिश्रित अर्थव्यवस्था (समाजवाद)	30
3.2. नियोजन तथा इसके प्रभाव (Planning and its Impact)	31
3.2.1. प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956)	32
3.2.2. द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1961)	32
3.2.3. तृतीय पंचवर्षीय योजना (1961-1966)	33
3.2.4. 1947-65 की योजनाओं की उपलब्धियाँ	33
3.2.5. पंचवर्षीय योजनाओं से सम्बंधित मुख्य विवाद	34
3.2.5.1. कृषि बनाम उद्योग (Agriculture vs. Industry)	34
3.2.5.2. निजी क्षेत्र बनाम सार्वजनिक क्षेत्र (Public vs. Private Sector)	35
3.3. हरित क्रांति (Green Revolution)	35
3.3.1. हरित क्रांति के पूर्व की परिस्थितियाँ	35
3.3.2. हरित क्रांति से पहले कृषि को बढ़ावा देने हेतु उठाये गए कदम	36
3.3.3. भारत में हरित क्रांति की शुरुआत	36
3.3.4. हरित क्रांति के दौरान महत्वपूर्ण सरकारी पहलें	37
3.3.5. हरित क्रांति के सकारात्मक प्रभाव	37
3.3.6. हरित क्रांति के दुष्प्रभाव	38
3.4. भूमि सुधार और सहकारिताएं	38
3.4.1. भूमि सुधार के उद्देश्य	39
3.4.2. भूमि सुधारों का विरोध	39
3.4.3. सुधारों का कार्यान्वयन	40
3.4.3.1. मध्यस्थों का उन्मूलन (Abolition of Intermediaries)	40
3.4.3.2. भूमि हदबंदी (Land ceilings)	40
3.4.3.3. जोतों का समेकन (Consolidation of Holdings)	40
3.4.4. सहकारिताएं (The Cooperatives)	41
3.4.5. 'ऑपरेशन फ्लड' का प्रारम्भ	43
3.4.5.1. 'ऑपरेशन फ्लड' का प्रभाव	43
3.4.6. सहकारीकरण की सीमाएं	44
अध्याय 4: भारत के विदेश सम्बन्ध	45
4.1. भारतीय विदेश नीति का परिचय	45
4.2. गुटनिरपेक्षता की नीति	46
4.2.1. गुटनिरपेक्षता के विचार की मूलभूत विशेषताएँ	46
4.2.2. गुटनिरपेक्ष नीति की पृष्ठभूमि	46
4.3. पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध: एक दृष्टि में	47
4.3.1. पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध	48
4.3.2. चीन के साथ सम्बन्ध	50
4.4. भारत की परमाणु नीति	51

अध्याय 5 : लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष संकट	52
5.1. आपातकाल	52
5.1.1. आपातकाल की पृष्ठभूमि	52
5.2. जे.पी.आंदोलन	54
5.3. नक्सली आंदोलन और माओवादी विद्रोह	55
5.4. सांप्रदायिकता	56
5.4.1. अयोध्या विवाद	56
5.4.2. सिख विरोधी दंगे	57
5.4.3. गुजरात में मुस्लिम विरोधी दंगे (2002)	58
अध्याय 6 : क्षेत्रीय असंतोष एवं इसका समाधान	59
6.1. क्षेत्रवाद का आधार (BASIS OF REGIONALISM)	59
6.1.1. आर्थिक असंतुलन और क्षेत्रवाद	59
6.1.2. भूमि-पुत्र की अवधारणा	60
6.2. जम्मू-कश्मीर एवं पंजाब का मुद्दा (Issue of J & K, Punjab)	60
6.2.1. जम्मू-कश्मीर का मुद्दा	60
6.2.2. पंजाब का मुद्दा	62
6.3. पूर्वोत्तर क्षेत्र की समस्याएं (Problems with North-East Region)	63
6.3.1. स्वायत्तता की मांग	64
6.3.2. अलगाववादी आंदोलन	64
6.3.2.1. मिजोरम	64
6.3.2.2. नागालैंड	65
6.3.3. बाहरी लोगों के विरुद्ध आंदोलन	66
6.4. क्षेत्रीय आकांक्षाओं और राष्ट्रीय एकीकरण का समायोजन	66
अध्याय 7: राज्यों का पुनर्गठन	67
7.1. भाषाई राज्यों का गठन (Formation of Linguistic States)	67
7.2. आंध्र का मामला: पहला भाषाई राज्य	67
7.3. राज्य पुनर्गठन समिति	68
7.4. पुनर्गठन के विशिष्ट मासले	69
7.4.1. सिक्किम	69
7.4.2. गोवा की मुक्ति	69
7.5. राज्यों के हालिया पुनर्गठन	70
7.5.1. छत्तीसगढ़	70
7.5.2. उत्तराखंड	70
7.5.3. झारखंड	71
7.5.4. तेलंगाना	71

7.6. राज्य निर्माण के लिए अन्य मांगें	71
अध्याय 8: समकालीन घटनाक्रम	72
8.1. गठबंधन की राजनीति (Politics of Coalition)	72
8.2. भारत में गठबंधन की राजनीति का प्रारम्भ	72
8.2.1. 1977 का आम चुनाव	72
8.2.2. 1977 में सरकार का गठन	73
8.2.3. निरंतर गठबंधन सरकारों का युग	73
8.3. मंडलवाद से संबंधित राजनीति	73
8.4. नई आर्थिक नीति, 1991 (New Economic Policy 1991)	74
8.4.1. उदारीकरण	74
8.4.2. निजीकरण	75
8.4.3. वैश्वीकरण	75
8.5. ICT (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) का युग	76
अध्याय 9: प्रमुख आंदोलन (Popular Movements)	77
9.1. परिचय	77
9.2. पर्यावरण आंदोलन (Environment Movement)	77
9.2.1. चिपको आंदोलन (Chipko Movement)	77
9.2.2. नर्मदा बचाओ आंदोलन (Narmada Bachao Aandolan: NBA)	78
9.2.3. साइलेंट वैली आंदोलन (Silent Valley Movement)	79
9.2.4. मछुआरों का आंदोलन (Fisheries Movement)	80
9.3. दलित आंदोलन (Dalit Movement)	80
9.4. अन्य पिछड़ा वर्ग आंदोलन (OBC Movements)	81
9.5. नए किसान आंदोलन (New Farmers Movement)	82
9.6. महिला आंदोलन (Women's Movement)	82
9.7. नागरिक लोकतांत्रिक आंदोलन (Civil Democratic Movement)	83

अध्याय 1: राष्ट्र निर्माण और एकीकरण: प्रक्रिया और चुनौतियाँ

(Nation Building and Consolidation: Process and Challenges)



1.1 परिचय (Introduction)

15 अगस्त 1947 को भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का अंत हो गया तथा भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की। हालांकि यह स्वतंत्रता देश के विभाजन की कीमत पर प्राप्त हुई थी। नवजात राष्ट्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा साम्प्रदायिक दंगों की चपेट में था। दो नए देशों की सीमाओं के आर-पार विशाल जनसमूह का पलायन हो रहा था। भोजन एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों का अभाव हो रहा था और प्रशासनिक तंत्र के टूट कर समाप्त हो जाने का खतरा मंडरा रहा था।

यह भौगोलिक रूप से विस्तृत और विविधता से परिपूर्ण विशाल देश था। समाज सदियों के पिछड़ेपन, द्वेष, पूर्वाग्रह, असमानता और निरक्षरता से पीड़ित था। औपनिवेशिक शासन और उद्योगों के सदियों के उत्पीड़न के बाद आर्थिक क्षेत्र में गरीबी थी और कृषि की दशा अच्छी नहीं थी। इस समय भारत के सम्मुख तात्कालिक समस्याएँ निम्नलिखित थीं-

- देशी रियासतों का विलय एवं क्षेत्रीय और प्रशासनिक एकीकरण
- विभाजन के साथ चल रहे साम्प्रदायिक दंगों पर नियंत्रण
- पाकिस्तान से आये साठ लाख शरणार्थियों का पुनर्वास
- साम्प्रदायिक गिरोहों से मुसलमानों की सुरक्षा
- पाकिस्तान के साथ युद्ध से बचाव और कम्युनिस्ट विद्रोहों पर नियंत्रण

साथ ही कुछ मध्यकालिक कार्य भी थे जैसे - संविधान का निर्माण, प्रतिनिधिमूलक जनवाद और नागरिक स्वतंत्रता पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण, केंद्र और राज्यों में उत्तरदायी और प्रतिनिधित्व व्यवस्था पर आधारित सरकारों की स्थापना के लिए चुनावों का आयोजन एवं आमूल भूमि सुधार के माध्यम से अर्ध सामंती कृषि व्यवस्था का उन्मूलन।

इसके अतिरिक्त नवगठित स्वतंत्र सरकार का दीर्घकालीन कार्यभार था राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन एवं राष्ट्र का सुदृढीकरण, राष्ट्र की रचना प्रक्रिया को आगे बढ़ाना, तीव्र स्वतंत्र आर्थिक विकास को प्रोत्साहन, जनता की असीम दरिद्रता का निवारण और उसके लिए नियोजन प्रक्रिया का आरम्भ, शताब्दियों के सामाजिक अन्यायों, असमानताओं और शोषण का उन्मूलन एवं अंततः एक ऐसी विदेश नीति का विकास जो भारत की स्वतंत्रता की रक्षा कर सके एवं शान्ति को बढ़ावा दे सके।

इन चुनौतियों के कारण कई पर्यवेक्षकों ने भारत के विघटन की भविष्यवाणी की, विशेष रूप से जब उन्होंने लोकतंत्र के विकास के लिए जरूरी स्थितियों के न होने के बावजूद सरकार की लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया। हालांकि स्वतंत्र भारत ने जब अपने नवनिर्माण का शुभारम्भ किया तो उसके पास मात्र समस्याएँ ही नहीं थी अपितु शक्ति भी थी। सबसे बड़ी शक्ति थी उच्च क्षमता और आदर्श वाले समर्पित महान नेताओं की मजबूत पंक्ति। इस समय का नेतृत्व भारत के सामाजिक और आर्थिक रूपांतरण तथा समाज और राजनीति के जनवादीकरण के प्रति पूर्णतः समर्पित था। नेहरू और अन्य नेता मानते थे कि देश के विकास और प्रशासन के लिए राष्ट्रीय आम सहमति का निर्माण आवश्यक था। इसके अतिरिक्त देश का प्राकृतिक संसाधन और यहाँ के परिश्रमी लोग तथा कांग्रेस पार्टी जिसकी जनता पर गहरी पकड़ और व्यापक समर्थन था। इस प्रकार इन शक्तियों ने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।

1.2. विभाजन और इसके बाद

स्वतंत्रता की खुशियाँ विभाजन की त्रासदी भी अपने साथ लेकर आई थी। इसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा और विस्थापन हुआ। इस प्रकार, प्रारम्भ में ही एकता और सामाजिक एकजुटता को औपनिवेशिक शासन द्वारा छोड़ी गई विरासत द्वारा चुनौती दी गई।



विभाजन के समय विस्थापन का एक दृश्य

1.2.1 विरासत और विभाजन के मुद्दे: सीमाएं, विस्थापन और पुनर्वास

आजादी में पाकिस्तान भारत के साथ था। इस प्रकार, ब्रिटिश भारत के 'विभाजन' के कारण, दो राष्ट्र राज्य अस्तित्व में आए। पाकिस्तान ब्रिटिश शासन द्वारा उत्पन्न की गई सांप्रदायिक राजनीति का चरमोत्कर्ष था, जिसका मुस्लिम लीग द्वारा "द्विराष्ट्र सिद्धांत" के रूप में समर्थन किया गया था।

1940 के दशक की उग्र परिस्थितियों और कई अन्य राजनीतिक घटनाओं के कारण राजनीतिक स्तर पर कई बदलाव आए। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा ब्रिटिश सरकार की भूमिका जैसी कई अन्य बातों के कारण पाकिस्तान के निर्माण की मांग मान ली गई।

1.2.2. सीमा रेखा

अब एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य सीमाओं का सीमांकन था। माउंटबेटन की तीन जून की योजना के फलस्वरूप ब्रिटिश न्यायवादी सर सिरिल रेडक्लिफ की अध्यक्षता में दो सीमा आयोग नियुक्त किए गए- एक बंगाल और एक पंजाब के लिए। इसका कार्य एक सुनिश्चित समय सीमा में हिन्दू तथा मुस्लिम बहुसंख्या वाले परन्तु संलग्न प्रदेशों अथवा ग्रामों का मानचित्रों पर निर्धारण करना था। जनसंख्या के साथ-साथ अन्य तत्वों जैसे संचार के साधन, नदियों तथा पहाड़ों आदि को भी ध्यान में रखना था। इस कार्य के लिए 6 सप्ताह का समय निर्धारित किया गया था। आयोग में चार अन्य सदस्य भी थे लेकिन कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच गतिरोध था। 17 अगस्त, 1947 को रेडक्लिफ महोदय ने अपने निर्णय की घोषणा की।

1.2.3. रेडक्लिफ निर्णय के निहितार्थ

इस निर्णय में धार्मिक बहुसंख्या के सिद्धांत का पालन करने का निर्णय लिया गया, जिसका अर्थ था कि ऐसे क्षेत्र जहाँ मुसलमान बहुसंख्या में हैं वहाँ पाकिस्तान के क्षेत्र का निर्माण किया जाएगा। शेष जनसंख्या को भारत के साथ ही रहना था।

